

भगत कबीर – सबद १०
किआ जप किआ तप किआ ब्रत पूजा ॥
राग गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२४

किआ जप किआ तप किआ ब्रत पूजा ॥

जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥ १ ॥

रे जन मन माधउ सिउ लाईऐ ॥

चतुराई न चतुरभुज पाईऐ ॥ रहाउ ॥

परहर लोभ अर लोकाचार ॥

परहर काम क्रोध अहंकार ॥ २ ॥

करम करत बधे अहमेव ॥

मिल पाथर की करही सेव ॥ ३ ॥

कह कबीर भगत कर पाइआ ॥

भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥

सार: चालाकी, जो बुद्धि और अहंकार से प्रेरित होती है हमें अपने सच्चे स्वरूप से जुड़ने से रोकती है क्योंकि इसका आधार छल है। दूसरों को धोखा देना अंततः स्वयं को धोखे की ओर ले जाता है क्योंकि हम सभी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। नम्रता का अभ्यास हमें अपने अहंकार को छोड़ने और विश्वव्यापी जुड़ाव को महसूस करने में मदद करता है।

किआ जप किआ तप किआ ब्रत पूजा ॥

मंत्र जपने, तप करने, ब्रत रखने या पूजा करने का क्या लाभ है।

जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥ १ ॥

अगर तुम्हारे दिल में दोहरी सोच और भेदभाव का प्रेम भरा हो। (१)

रे जन मन माधउ सिउ लाईऐ ॥

अरे लोगों, अपने मन को उस सर्वव्यापी माधव ऊर्जा से जोड़ो ।

चतुराई न चतुरभुज पाईऐ ॥ रहाउ ॥

चालाकी से तुम उस सर्वव्यापी ऊर्जा (चतुर्भुज) को नहीं समझ सकते । (विराम)

परहर लोभ अर लोकाचार ॥

अपने लालच को छोड़ो और दूसरों को झूठे दिखावे से प्रभावित करना बंद करो ।

परहर काम क्रोध अहंकार ॥ २ ॥

अनियंत्रित इच्छाओं, गुस्से और अहंकार को त्यागो । (२)

करम करत बधे अहमेव ॥

बिना सोचे-समझे रीति-रिवाजों का पालन करने से व्यक्ति अपने अहंकार में बंध जाता है ।

मिल पाथर की करही सेव ॥ ३ ॥

एकत्र होकर सामूहिक रूप से पत्थरों की पूजा करते हैं । (३)

कह कबीर भगत कर पाइआ ॥

कबीर कहते हैं, हालाँकि भक्ति से ही सर्वव्यापी चेतना प्राप्त होती है ।

भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥

निर्मल और शुद्ध भावनाओं से दिव्य जागरूकता प्राप्त होती है । (४)(६)

तत्त्व: भगत कबीर कहते हैं कि सच्चे और स्पष्ट इरादे मन को रौशन करते हैं, जिससे व्यक्ति हर चीज़ में ईश्वर की सूक्ष्म उपस्थिति को अनुभव कर सकता है। इस आध्यात्मिक समझ का रास्ता भक्ति और अहंकार का त्याग करके उस ऊर्जा के साथ एकता में आता है जो पूरे अस्तित्व में व्याप्त है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com